Indian J.Soc & Pol. 03(03):2016:109-112 **ISSN 2348-0084 (PRINT)**
(Special Print Issue: September, 2016) **ISSN 2455-2127(ONLINE)**

सैय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान : एक इतिहासकार के रूप में

सलमा बानों[1]
[1]शोधार्थिनी, मध्यकालीन इतिहास , वीर वहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उ0प्र0, भारत

ABSTRACT

सैय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान भारतीय इतिहासकारों में अपना एक मुख्य स्थान रखते हैं। इनके द्वारा जो इतिहासिक ग्रन्थ लिखे गये वह एक इतिहासिक दर्पण के रूप में हमारे समक्ष है। एक इतिहासकार का प्रथम दायित्व यह होता है कि इतिहास लिखते समय उसे निष्पक्ष होना नितांत आवश्यक है। उसमें साम्प्रदायिक भावनाओं का न होना एक इतिहासकार की प्रथम सीढ़ी है । जैसा कि अनेकों महान इतिहासकारों ने इस भावना से बचने का प्रयास किया नहीं। किन्तु सैय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान 1192 से 1857 तक मुस्लिम तक मुस्लिम शासनकाल का इतिहास लिख कर यह सिद्ध कर दिया कि इतिहास ऐसे लिखा जाता है। यदि इतिहास लेखन का प्रचलन न होता तो आज हम संसार के इतिहास से अनभिज्ञ होते। न तो हमें समूचे विश्व की जातियाँ उनकी सभ्यताओं उनके रहन सहन, बोल चाल, खान पान एवं उनके उत्थान पतन की कथा हम तक पहुँचती। इस लिये एक इतिहासकार को इतिहास लिखते समय उक्त बातों पर ध्यान देना आवश्यक है।

***KEY WORDS:** सैय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान, इतिहास लेखन,*

इतिहास साहित्य की ही एक परिभाषा है इतिहास इस शब्द से प्रायः अभिप्राय यह लिया जाता है कि युगों की घटनाओं को क्रमवार से लिखना ही इतिहास कहलाता है । आज जो घटनायें हमारे समक्ष घटती हैं वह एक वर्णन तथा कथा समझा जाता है, कि आगे चल कर वह घटना इतिहास बन जाती है। इंग्लैंड के प्रसिद्ध इतिहासकार मिस्टर बकल ने इतिहास की परिभाषा इस प्रकार की है। '' प्रकृति मनुष्य की स्थिति में जो परिवर्तन करती है तथा मनुष्य जो बदलाव प्रकृति में करता है उसी संग्रह का नाम इतिहास है।'' युग साक्षी है कि जब अभी मनुष्य लिखना नहीं जानता था उस समय भी इतिहास का अस्तित्व था, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हृदय द्वारा प्रचलित था। जब युग एवं समय बदला तो इतिहास का संग्रह करना अनिवार्य हो गया। अतः समय की आवश्यकता को देखते हुये लिखने के लिये का अविष्कार हुआ तथा लिखने की प्रक्रिया लिखने की प्रक्रिया आरम्भ हुयी एवं इतिहासिक घटनाओं को क्रमबद्ध रूप से लिखना आरम्भ हुआ । इस प्रकार इतिहास स्थिति एवं हालात को देखते हुये इतिहास लिखना आरम्भ हुआ।

इतिहास लेखन का आरम्भ आकाशीय पुस्तकों द्वारा हुआ। पवित्र तौरात में आदम के जन्म से मूसा अलैहिस्सलाम तक इतिहासिक घटनाओं की जानकारी प्राप्त होती है। इंजील मुबारक में फिरऔन मिस्री राजा, बाबुल, नैनवा, महाभारत, एवं रामायण द्वारा प्राचीन भारत के इतिहास की जानकारी होती है। तथा कथाओं के माध्यम से मालूमात होती है। हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृथ्वीराज रासव के लेखक लिखते हैं कि.....

''वास्तव में इस देश में इतिहास को वर्तमान अर्थों में कभी नहीं लिया गया। इतिहासिक व्यक्तियों को कल्पना स्वरूप शरीर की आकृति बना देना हमारा स्वभाव रहा है।''

मध्य भारत के मुस्लिम इतिहासकारों पर एक नज़र डाली जाय तो दिल्ली सुल्तानों के युग में ज्याउद्दीन बरनी, मिंहाज सिराज, शम्स सिराज अफीफ, यहिया बिन अहमद सर हिन्दी आदि हैं। दक्षिण के इतिहासकारों में मुहम्मद बिन कासिम, हिन्दु शाह फरिश्ता, रफीउद्दीन शीराज़ी, अली बिन अजीजुल्लाह तबा तबाई, मुहम्मद बिन इब्राहीम जुबेरी, मुल्ला अरब शीराज़ी निजामुद्दीन शीराज़ी आदि हैं। मुगल युग में अबुल फज़्ल अलामी, निज़ामुद्दीन, बख्शी, मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी, मुल्ला शरीफ, मोतमिद खाँ, मिर्ज़ा कामगार हुसेनी, अब्दुल हमीद लाहौरी, मुहम्मद सालेह कम्बोह, मिर्ज़ा मुहम्मद ताहिर आशना, आकिल खाँ, मिर्जा मुबारक आदि मुगलकाल के मुख्य इतिहासकारों में गणना होती है जिन्होंने विभिन्न युगों पर इतिहास लिखे हैं। मध्यकालीन भारत में ''तारीख फिरोज़ शाही, तबकोत नासिरी तारीख मुबारक शाही, तारीख फरिश्ता, आईने

1.Corresponding Author

अकबरी, मन्तखब तवारीख,'' जैसी महान इतिहासिक पुस्तकें लिखी गयीं। यद्यपि उर्दु भाषा का जन्म मध्ययुगीन भारत अलाउद्दीन खिलजी के शासन काल में हुआ। किन्तु इतिहास नामी शीर्षक पर कोई पुस्तक उस काल में नहीं लिखी गयी।

फोर्ट कालेज

सन 1800 में फोर्ट विलियम की स्थापना हुयी। इस कालेज में उर्दु की बहुत सी पुस्तकें लिखी गयीं। उर्दु के विषय में इसकी प्रगति सराहनीय है।

असम का इतिहास

मीर बहादुर अली ने शहाबुद्दीन द्वारा लिखी गयी असम इतिहास का उर्दु भाषा में अनुवाद हुसेनी ने किया। मुंशी सजान राय द्वारा फारसी में लिखे इतिहास का अनुवाद शेर अली ने 1805 में किया।

बहमनी शासकों का इतिहास

इसके अनुवादक मिर्जा काजिम अली हैं जिन्होंने फारसी के लिखे इस इतिहास का उर्दु अनुवाद किया इसका अनुवाद 1807 में हुआ।

जहाँगीर शाही

इसका उर्दु अनुवाद मज़हर अली खाँ ने मोइट के अनुरोध पर किया, इसके अनुवाद का वर्ष 1809 है।

तारीख नादरी

नादिर शाह के घटना लेखक मुंशी मुहम्मद मेंहदी के फारसी में इतिहास का उर्दु अनुवाद टेलर तथा हंटर के अनुरोध पर किया।

किताब वाकिआते अकबर

यह इतिहास फारसी में अबुल फज़्ल ने लिखी इसका उर्दु अनुवाद अकबर नामा के नाम से खलील अली ने किया ये पुस्तक अकबर के शासन काल का महत्वपूर्ण इतिहास है।

दिल्ली कालेज

19वीं शताब्दी में इस कालेज की स्थापना अंग्रेज़ों द्वारा की गयी इस कालेज से देश की विभिन्न भाषाओं में इतिहास लेखन का कार्य आरम्भ हुआ। डा0 समीउल्लाह ने दिल्ली कालेज में जो इतिहासिक पुस्तकें लिखी गयीं उनकी सूची प्रस्तुत की जो उर्दु में इतिहास लेखन से सम्बद्ध है।

1 तारीख कश्मीरं
2 तारीख बंगाल
3 पंजाब के सिख शासन काल का इतिहासं
4 तुज्के तैमूरी।
5 तवारीख यूनान।
6 तारीख ईरान।
7 सिकन्दर महान।
8 मुगल का इतिहास
9 तारीख हिन्द।
10 इंग्लैंड का इतिहास।

साइंटिफिकसोसाइटी द्वारा इतिहासिक पुस्तकें

1857 के पश्चात मुगल शासन सदा के लिए समाप्त हो गया। चूंकि गदर की सारी जिम्मेदारी मुसलमानों पर डाली थी अतः अधिकतर मुस्लिम वर्ग इनके अत्याचार तथा बर्बरता की भेंट चढ़ गये। अंग्रेज़ों के भारत पर अधिकार करने के पश्चात मुसलमान अपने को मुसलमान कहने से डरता था। जो इतिहासिक पुस्तकों की सूची प्रस्तुत की उसके अंतर्गत निम्न इतिहासिक पुस्तकें लिखी गयीं।

1 मिस्र का इतिहास।
2 चीन का इतिहास।
3 हिन्दुस्तान का इतिहास।
4 ईरान का इतिहास।
5 सिंध का इतिहास।

स्वतंत्रता के बाद भारत–पाक में इतिहास पर महत्वपूर्ण कार्य का आरम्भ हुआ मध्ययुगीन भारत के सुल्तानों तथा मुगल बादशाहों के इतिहास लेखन अधिक रूचि दिखाई गयी। इस प्रकार उर्दु में इतिहास लेखन का आरम्भ सम्भव हो सका किन्तु उर्दु इतिहासकारों की रूचि शासकों राजनैतिक कारनामों तक सीमित थी। हिन्द–पाक के विद्वानों ने मध्य युगीन भारत के इतिहास में दूसरे महत्वपूर्ण पहलूओं की ओर ध्यान दिलाया।

इतिहास विषय पर भारत में शोध कार्य एवं लेखन का कार्य उर्दु में दारूल मुसन्निफीन आज़मगढ़ का ऋणी है। आज़मगढ़ में सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान के शोध तथा प्रयासों के चलते इन्होंने जो उर्दु में इतिहास की पुस्तकें लिखीं उनकी एक लम्बी सूची है यहाँ पर उनके द्वारा लिखी पुस्तकों की सूचि निम्न है।

नाम पुस्तक	प्रकाशक	सन्
1 बज़्मे तैमूरियामुआरिफ	प्रेस आज़मगढ़ तीन भागों में	1948
2 बज़्मे सूफिया	'' '' ''	1950

3 बज़्मे ममलूकिया " " " " 1955

4 हिन्दुस्तान के अहदे वुस्ता की एक झलक" " 1958

5 हिन्दुस्तान के अहदे वुस्ता का फौजी निज़ाम '" 1960

हुकमाराँ के तमद्दुनी जलवे ु आरिफ प्रेस आज़मगढ़ 1963

7 हिन्दुस्तान के सलातीन उलमा मशाएख के के तअल्लुकात पर एक नज़र' " " 1964

8 हिन्दुस्तान अमीर खुसरू की नज़र में 1965

9 ज़हीरूद्दीन बाबर" " 1967

10 हिन्दुस्तान बज़्में रफता की सच्ची कहानियाँ 1968

11 हिन्दुस्तान के अहदे माज़ी में मुसलमान हुकमरानों की मज़हबी रवादारी तीन भागों में" 1975

12 अमीर खुसरू' " " 1980

13 सलातीन देहली के अहद में हिन्दुस्तान से मुहब्बत व शीफतगी के जज़्बातउर्दु अकाडमी, लखनऊ 1983

14 इस्लाम में मज़हबी रवादारीमुआरिफ प्रेस आज़मगढ़ 1987

15 मुगल बादशाहों के अहद में मुहब्बत के जज़्बात 1988

सैय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान इतिहास लेखन में स्थान

अंग्रेज़ इतिहासकारों ने अपने राजनैतिक उद्देश्यों के लिये मध्य भारत इतिहास का लेखन इस प्रकार कराया जिस से भारत के लोग ये समझें कि वह युग तितर बितर एवं विपत्तियों का युग था जहाँ अत्याचार एवं बर्बरता का वातावरण समूचे देश में फैला हुआ था। जैसे समूचा देश मुस्लिम राज की स्थापना भारत की तबाही बरबादी का राज था। मुसलमानों के आते ही देश भर में लूट पाट, हत्या, अत्याचार का दौर आरम्भ हो गया था। जिसने हिन्दू सभ्यता संस्कृति की बुनयादों को उखाड़ फेंका था। हिन्दुस्तान के पवित्र स्थानों को उखाड़ फेंका था। और उनकी शाइस्तगी को समाप्त कर दिया था। इस गलत फहमी का कारण यह था कि इतिहास लेखकों ने लिखते समय उस युग में हिन्दू मुस्लिम समाज में धार्मिक एवं शिष्टाचार के बीच जो आपसी मेल मिलाप हो रहा था उसे या तो अमहत्व पूर्ण न समझते हुये नज़र अन्दाज़ कर दिया तथा इतिहासिक तथ्यों को समझने का बहुत कम प्रयास किया। शिब्ली तथा उनकी संस्था के लोगों ने इस ओर ध्यान दिया। दारूल मुसन्निफीन के इतिहासकारों ने यह दिखाने का प्रयास किया कि दोनों धर्मों के बीच एक मेल मिलाप का संगम हो।

दारूल मुसन्निफीन ने केवल इतिहास लेखन का केन्द्र था बल्कि यह एक ऐसा केन्द्र था जिसकी सोचें इतिहास के विषय अलग थीं। भारत का इतिहास हमारा बहुत महत्वपूर्ण सरमाया है। मौलाना शिब्ली ने लिखा कि इतिहास लिखते समय दो बातों की ओर ध्याान देना आवश्यक है।

1. प्रथम यह कि जिस काल युग का इतिहास लिखा जाय उस युग की हर प्रकार की घटनाओं को लिखा जाये।
2. दूसरे यह कि जो भी घटनायें घटीं उसका क्या कारण था।

शिब्ली से पूर्व नेश्नलिस्ट इतिहासकारों ने इसका उत्तर तो दिया किन्तु उनके लेखन में बहुत सी कमियाँ थी।

सबाहद्दीन अब्दुर्रहमान ने इतिहास लेखन को अपने जीवन उद्देश्य बना लिया तथा समूचा जीवन भारतीय मध्ययुगीन भारत का इतिहास लिखते व्यतीत किया। उनके इतिहास लेखन पर टीका टिप्पड़ी करते हुये डा0 सैय्यद जमालुद्दीन लिखते हैं,

उर्दु इतिहास लेखन में सबाहुद्दीन को प्राथमिकता प्राप्त है, उन्होंने मुस्लिम शासन काल का जो इतिहास लिखा है उस काल के एक वस्तु की चर्चा की है चाहे उस समय का समाज हो या उस काल के रहन सहन, बोल चाल, खान–पान, रस्म–रिवाज, सभ्यता एवं संस्कृति, उस काल के शिक्षित व्यक्तियों विद्वानों एवं एक एक छिपी वस्तुओं तक पर लेखनी चलायी है।

इतिहास लेखन एक सच्चाई है तथा इतिहासकार को सच्चा होना आवश्यक है क्योंकि यदि हमने सच्चाई की ओर से आँखें बन्द करली एवं पक्षपात से काम लिया तो ऐसा इतिहास समाज में सम्प्रदायिकता का बढ़ावा देकर जनता को गुमराह करते हैं। किन्तु जो इतिहासकार है वह इतिहास की सच्चाई को सामने लाकर लोगों को भ्रमित करने से बचाता है।

इसी प्रकार उर्दु इतिहास लेखन में सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान की अनुपम्ता यह है कि वह इतिहासिक घटनाओं को जैसे घटी उसी प्रकार उसे सत्यता के साथ प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने मध्ययुगीन भारत का जो इतिहास लिखा है वह सत्य पर आधारित है। यही इतिहासकारों में उनकी प्राथमिकता है।

संदर्भ

नोमानी, डा0 खुर्शीद अहमद (1977) : *दारूल मुसन्निफीन की अदबी खिदमात* मुम्बई, रहीमी प्रेस

अब्दुर्रहमान सैय्यद सबाहुद्दीन (1960) '' *हिन्दुस्तान अहदे वुस्ता का फौजी निज़ाम'* आजमगढ़, मुआरिफ प्रेस

अब्दुर्रहमान सैय्यद सबाहुद्दीन (1963) *''हिन्दुस्तान के मुस्लिम हुक्मरानों के तमद्दुनी जलवे'* आजमगढ़, दारूल मुसन्निफीन एकेडमी

अब्दुर्रहमान सैय्यद सबाहुद्दीन (1981)'' *यादे रफतगाँ'* आजमगढ़, दारूल मसन्निफीन

अब्दुर्रहमान सैय्यद सबाहुद्दीन (1987) '' *अहदे मुगलिया मुसलमान व हिन्दु इतिहासकारों की दृष्टि में ज़हीरूद्दीन मुहम्मद बाबर*– आजमगढ़ दारूल मुसन्निफीन

अब्दुर्रहमान सैय्यद सबाहुद्दीन (1987)'' *इस्लाम में धार्मिक परम्परायें'* आजमगढ़, मुआरिफ प्रेस

अब्दुर्रहमान सैय्यद सबाहुद्दीन(1973) *''बज़्मे तैमूरिया''* आज़मगढ़ प्रथम भाग दारूल मुसन्निफीन